।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मधु जनिषीय मधु वंशिषीय। पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा।। अर्थ. 9/1/14।।

हे प्रभो! मैं मधुर बोलूँ और शुभ आचरण करूँ, मधु मधुर स्वाभाव की कामना करूँ।।

वर्ष 36, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 04 फरवरी, 2013 से 10 फरवरी, 2013

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 8 तक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट ,नई दिल्ली के सहयोग से

विश्व पुस्तक मेला – 2013 प्रगति मैदान में

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार स्टाल का उद्घाटन सम्पन्न

उद्घाटन करते हुए बिहार सभा के प्रधान श्री गंगाप्रसाद जी एवं दिल्ली सभा के वरिष्ठ उपप्रधान धर्मपाल आर्य जी तथा अन्य आर्यजन

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) दयानन्द आर्य विद्या निकेतन धनश्री असम के बन रहे भवन का हुआ निरीक्षण

भवन निर्माण कार्य का निरीक्षण करते सर्वश्री जोगेन्दर खट्टर जी, विनय आर्य जी व साथ में श्री वाचेनिधि आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध

नवगठित आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली के तत्वावधान में

महाशय धर्मपाल भवन का शिलान्यास समारोह

तिथि : रविवार, 10 फरवरी 2013 प्रातः 11 बजे

स्थान :बी/203 डी ब्लाक गली नं.-17 आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

निवेदक :

अंगत सिंग आर्य — प्रधान

आर्य नरेशचन्द्र गुप्ता — मन्त्री

आर्यसमाज खजुरी खास, दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम का वार्षिकोत्सव एवं

महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) आर्य व्यास वानप्रस्थाश्रम का उद्घाटन समारोह

उद्घाटक : महाशय धर्मपाल जी अध्यक्ष : आचार्य बलदेव जी

तिथि : रविवार, 24 फरवरी 2013 , प्रातः 10 बजे

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय परली वैजनाथ जिला -बीड (महाराष्ट्र)

निवेदक :

रामपाल लोहिया (प्रधान)

उग्रसेन राठौर (मन्त्री)

आर्य समाज परली वैजनाथ, जिला - बीड (महाराष्ट्र)

वेद-चिन्तन

नासदीय सूक्तः सृष्टि विषयक ज्ञान पर एक दार्शनिक चिन्तन

डॉ. प्रतिभा शुक्ला

वेद के नासदीय सूक्तों की व्याख्या वेद भाष्यकारों और वेदविदों ने अपने ज्ञान के अनुसार की है। सृष्टि सृजन और सृष्टि विज्ञान से सम्बन्धित ये सूक्त सृष्टि के अनेक रहस्यों को व्यक्त करते हैं। अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित'वेद गोष्ठी' में प्रस्तुत किया गया यह लेख वेद जिज्ञासु पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसे क्रमशः प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है पाठकगण इसका लाभ उठाएँगे।

वेद अखिल सृष्टि के पथ प्रदर्शक ग्रन्थ हैं। यह मनुष्यकृत नहीं अपितु अपोरुषेय हैं। वैदिक मन्त्रों में सृष्टिविद्या अथवा सृष्टि–विज्ञान सम्बन्धी चिन्तन अनेकसः विद्यमान हैं। ऋग्वेद के जिन सूक्तों में सृष्टि विषयक ज्ञान की व्यवस्थित योजना बताई गई है उनमें नासदीय सूक्त (10, 129) का प्रमुख स्थान है। इस दार्शनिक सूक्त में कुल सात मन्त्र हैं।

प्रथम मन्त्र है–

नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परोयत्।
किमावरीयः कुह कस्य शर्मन् अम्भः किमासीत् गहनं गभीरम्।।

अर्थात् उस समय (प्रलयावस्था) में) न असत् था और न सत् था। न लोक थे न ऊपर का आकाश। किसने आवृत किया था ? कहाँ, किसकी सुरक्षा में? क्या अपार गम्भीर जल था? इस मन्त्र का **ऋषिः प्रजापति परमेष्ठी,देवता– भाववृत्तम और छन्द– त्रिष्टुप है।**

महर्षि दयानन्द ने सृष्टि विद्या का विवेचन करने वाले मन्त्रों की व्याख्या अपने ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के भाष्यों में की है। महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की कि पूर्वकृत विनियोगों में जो युक्तिसिद्ध वेदादि प्रमाणों के अनुकूल और मन्त्रार्थ का अनुसरण करने वाले विनियोग हैं, वे ही ग्राह्य हो सकते हैं। महर्षि के वेदभाष्य से यह स्पष्ट है कि पूर्व विनियोगों से स्वतन्त्र होकर की गई उनकी वेद–व्याख्या महान् उपकारक सिद्ध हुई है और उससे पाठक को वेदों में मानवोपयोगी विविध ज्ञान–विज्ञानों एवं कर्तव्यों का दर्शन हो जाता है तथा उसे यह भ्रान्ति नहीं होती कि वेद में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं।

प्रथम मन्त्र के व्याख्यान में महर्षि लिखाते हैं– **'यदा कार्यं जगनोत्पन्नमासीत्तदाऽसत् सृष्टेः प्राक् शून्यमाकाशमपि नासीत्। कुतः तद् व्यवहारस्य वर्तमानाभावात्। तस्मिन्काले सत् प्रकृत्यात्मकम्व्यक्तं, सत्संज्ञकं यत्जगत्कारणं, तदपि नो आसीन्नावर्तत। परमाणवोऽपि नासन् व्योमाकाशमपरं यस्मिन् विराडाख्ये सोऽपि नो आसीत्। किन्तु पर ब्रह्मणः सामर्थ्याख्यमतीव सूक्ष्मं सर्वस्यास्य परमकारणसंज्ञकमेव तदानी समवर्तत। यत्प्रातः कुहकस्यावर्षाकाले धूमाकारेण वृष्टं किञ्चिज्जलं वर्तमानं भवति, यथा नेतज्जलेन पथिव्यावरणं भवति, नदीप्रवाहादिकं च चलति, अतएवोक्तं तज्जलं गहनं गभीरं किं भवति ? नेत्याह । किंत्वावरीवः आवरकमाच्छादकं भवति? नैव कदाचित् तस्यातीवाल्पत्वात्, तथैव सर्वं जगत् तत्सामर्थ्यादुत्पद्यास्ति तच्छर्मणि शुद्धे ब्रह्मणि। किं गहनं गभीरमधिकं भवति? नेत्याह। अतस्तद् ब्रह्मणः कदाचिन्नैवारकं भवति। कुतः जगतः किञ्चिन्मात्रत्वाद् ब्रह्मणोऽनन्तत्वाच्च।**

अर्थात् यह कार्य जगत् जब उत्पन्न नहीं हुआ था उस समय उससे पूर्व असत् अर्थात् शून्य आकाश भी नहीं था। क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नहीं था। उस काल में सत्, रज, तम प्रधान प्रकृति रूप अव्यक्त भी नहीं था। सत् संज्ञक जगत् का कारण भी नहीं था। उस समय परमाणु भी नहीं थे। उस समय विराट् रूप स्थूल जगत् के निवास का स्थान परम व्योमाकाश भी नहीं था। परन्तु परब्रह्म का सामर्थ्य रूप अतीव सूक्ष्म इन सबका परम कारण वर्तमान था। प्रातःकाल कुहरे की वर्षा से धूमाकार कुछ जल उपस्थित होता है वह जिस प्रकार पृथ्वी का आवरणकर्ता नहीं हो सकता। नदी–प्रवाह की तरह नहीं चल सकता, इसीलिए कहा है कि क्या वह जल गहरा हो सकता है? कभी नहीं। क्या वह आवरण करने वाला हो सकता है? नहीं, कदापि नहीं क्योंकि वह अत्यल्प होता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण जगत् उस परमेश्वर के सामर्थ्य से ही उत्पन्न होता है और उसी ब्रह्म में निवास करता है। क्या वह गहन गम्भीर और अधिक हो सकता है ? कभी नहीं। इसीलिए वह उस ब्रह्म का कभी आवरणकर्ता नहीं हो सकता, क्योंकि यह जगत् अत्यल्प है और ब्रह्म अनन्त है।'

सांख्य में प्रकृति को ही वह परम सत्ता माना है जो इस जगत् की सम्पूर्ण घटनाओं के मूल कारण में है। प्रकृति शाश्वत, अकारण, सर्वव्यापक ,अविवेकी, त्रिगुणात्मक, सामान्य, अ व्यक्त, अचेतन एवं प्रसवधर्मी है। जगत् की समस्त वस्तुओं का मूलकारण प्रकृति है। यह प्रधान होने से अन्ततः सभी तत्त्व इसी में समाहित होते हैं। स्वरूप से प्रकृति त्रिगुणात्मक है। सत् रज एवं तम तीनों गुणों की साम्यावस्था ही प्रकृति है। सत्व प्रकाशक रज चंचल एवं तम भारयुक्त स्वभाव वाले गुण होते हैं।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में सांख्य–सूत्र के माध्यम से प्रकृति के विषय में कहते हैं।

सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽ हंकारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रिय पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः। (सांख्य सूत्र अ. 1 सू. 61)

सत्त्व अर्थात् शुद्ध रजः अर्थात् मध्य तमः अर्थात् जड़ता–तीन वस्तुएँ मिलकर जो एक संघात हैं, उसका नाम प्रकृति है। उससे महत् तत्त्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे पञ्चतन्मात्रा, सूक्ष्मभूत और दश इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पाँच भूत .....

क्रमशः .....

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद-विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक के ग्यारहवें भाग का काव्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। विश्व को दिए महर्षि 'शिक्षा और संस्कृति से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है-अखिलेश आर्येन्दु

स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल वह जहां युवाओं को यह उत्तम शिक्षा दी जाती "पोषण दो सदा उसी को जो हो सत्य तथा जो हो उदार"

"बल–दृढ़ता अरु संकल्प शक्ति" ये थे उनके गुंजरित सूत्र
अपने जीवन कार्यों को उसने इसी रीति से सृजित किया।
शुभ 'आर्य समाज' नाम उसने तब दिया कार्य विधि को अपनी–
ऐसा समाज जिसमें उन सबका प्रेम–स्नेह युत स्वागत था–
वे सब जो सत्योपासक थे, गंभीर तथा आस्थावादी–
निज विस्तृत ज्ञान पिपासा के जो अविरल, अथक अभीप्सुक थे
जन अनाथ, पीड़ित अकाल के अरु जाति–बहिष्कृत महादीन,
विधवाएं अरु निर्धन एकाकी तथा भटकते नर अधीर,
सबका समान, निष्पक्ष भाव से स्वागत तत्पर होता था,
सब एक अनन्य बन्धु भावान्विततता में लय हो जाते थे
"आगे बढ़कर निज श्रेष्ठ पुरातन संस्कृति को देखो, समझो
अपने सुआर्य आदर्शों की पहचान करो, अभ्यास करो
जीवन फिर वैसा जिओ, कि पूर्वज भद्र तुम्हारे जीते थे
आत्मा के केन्द्र समान स्वयं के गृह निवास का सृजन करो
माता अरु पिता, अतिथि, बालक–देवों सम इनका मान करो
भृत्यों से, सेवक जन से निज बालक समान व्यवहार करो,
उनके कर्त्तव्य बताओ अरु उनको दो चेतावनी सतत
आवश्यकता वाले जन–जन को उन्मुक्त–मना, सहायता दो,
जो दान और भिक्षा निमित्त आपके द्वार पर आ जाएं।
सौन्दर्य भाव से रहो सदा, वैदिक संस्कृति में पगे हुए,
इस तरह तुम्हारे गृह निवास बन जाएंगे प्रभु के मंदिर"

इस रीति पुराने आदर्शों का सतत प्रचार किया उसने
वैदिक शिक्षाएं जो ऋषियों के अन्तरहृदय विनिःसृत थीं,
परमात्म तत्त्व से एकात्मकता था जिनका आधार प्रबल,
जो प्रकृति की अनुसरण साधना के समानतर चलते थे,
गुरुकुल जो आर्य प्रणाली के शिक्षण पर ही आधारित थे
जिस विधि में हृदय तथा मानस दोनों ही पोषण पाते थे।
जिस विधि में युवा प्रशिक्षित होते थे कि सदा परिपुष्ट करें–
वह सब कुछ जो कि सत्यमय है, वह सब कुछ जो उदार भी है
भाविष्यक सेवा के निमित्त जो शपथपूर्ण जीवन जीएं।
सब जन से भ्रातृ–बन्धु सम ही संतत विचार–व्यवहार करें
वे जीव भूमि के हों अथवा नभ वासी हों या जलचर हों
शुभ सत्यपूर्ण जीवन धारें, सब पाप दुरित से दूर रहें,
प्रत्येक निमिष जागरूक बनें, ब्रह्मचर्यात्मा में बास करें।"
अब बनीं अनेक संस्थाएं, वैदिक संस्कृति–क्षेत्र गुरुकुल,
आ गए अनेकों कर्मठ अरु विश्वास पात्र कर्ता, कर्मी,
आनन्दपूर्ण एवं आदर्श समर्पित थे जो सद्भावी–
अपने स्वामी के उपवन की सेवा था जिनका चरम ध्येय
अरु ये सिद्वान्त कार्य अविरल प्रतिवर्ष विकसते जाते थे,
आगे व्यापक होते जाते, अपनी शाखाएं फैलाते,
अपने कृत्यों के सुफल तथा सुरभित प्रसून सुन्दर, सुमधुर
इस रीति दयानन्द स्वयं विनिर्मित कार्यों में परिजीवित थे।

स्मरण सांख्य दर्शन के मर्मज्ञ पं. उदयवीर शास्त्री

क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर अपनी सारस्वत साधना के द्वारा पं.उदयवीर शास्त्री जी ने यह सिद्ध कर दिया कि वर्ण का निश्चय जन्म से नहीं अपितु कर्म से होता है। आजीवन निरीह,नि:स्पृह रहे तथा त्याग वृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाले पं.उदयवीर से अधिक श्रेष्ठ विद्या व्यसनी ब्राह्मण कहाँ दिखाई देते हैं?

उदयवीर जी का जन्म 5 जनवरी, 1895 को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के बनैल ग्राम में श्री पूर्णसिंह के यहाँ हुआ। 1904 में जब ये मात्र नौ वर्ष के थे, उन्हें समीप के गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) में भर्ती कराया गया। यहाँ से वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट हुए और वहाँ से विद्या भास्कर की परीक्षाएँ क्रमश: 1915 तथा 1916 में पास कीं। आपके अगाध पाण्डित्य तथा वैदुष्य का सम्मान करते हुए महाविद्यालय ज्वालापुर ने आपको 'विद्या वाचस्पति' की मानद उपाधि प्रदान की। आर्यसमाज से भिन्न क्षेत्रों में भी आपकी विद्वता का सम्मान हुआ। पुरी के तत्कालीन शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ ने आपको 'शास्त्र शेवधि' तथा 'वेद रत्न' की उपाधियों से विभूषित किया।

पं. उदयवीरजी की साहित्य साधना का आरम्भ महामति चाणक्य के द्वारा लिखे गए 'अर्थशास्त्र' के हिन्दी रूपान्तर से होता है। 1925 में उन्होंने माधव यज्वा लिखित इस ग्रन्थ की टीका 'जय चन्द्रिका' के साथ इसका सम्पादन किया। मोतीलाल बनारसीदास ने लाहौर से इस विश्वविख्यात ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद को तीन खण्डों में प्रकाशित किया था। इसके अतिरिक्त आपने काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ वाग्भटालंकार की संस्कृत एवं हिन्दी में व्याख्या लिखी जो लाहौर से छपी। पं. उदयवीर जी की प्रमुख साहित्यिक देन षड्दर्शन विषयक उनके शोध तथा इन दर्शन ग्रन्थों की व्याख्या एवं विवेचना से सम्बन्धित है। उनके लेखन को सर्वाधिक सम्मान मिला 'सांख्य दर्शन का इतिहास' से। यह ग्रन्थ 1950 में प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ एक महाप्रबन्ध है जिसमें कपिल मुनि प्रणीत सांख्य दर्शन पर लेखनी उठाने वाले प्राचीन,मध्यकालीन तथा अर्वाचीन सभी लेखकों के कृतित्व का सांगोपांग विवेचन किया गया है। कालक्रमानुसार किया गया यह विवेचन इस दर्शन का समग्र इतिहास तथा उसकी गहन समीक्षा है। इस ग्रन्थ के द्वारा जो निष्कर्ष लेखक ने निकाले हैं वे इस प्रकार हैं– सांख्य दर्शन संसार का प्राचीनतम दार्शनिक सिद्धात है और इसके रचयिता कपिल संसार के प्राचीनतम दार्शनिक हैं। वे आधुनिक विद्वानों की इस धारण से सहमत नहीं हैं कि षड्ध्यायी सांख्य दर्शन एक अर्वाचीन कृति है तथा ईश्वरकृष्ण की सांख्य कारिकाएँ इस सूत्र ग्रन्थ से अधिक प्राचीन हैं। इस धारण के विपरीत उन्होंने कपिल सूत्रों की प्राचीनता तथा सांख्य सप्तति की अर्वाचीनता को सप्रमाण सिद्ध किया। वे यह बताने में सफल रहे कि वस्तुत: सांख्य कारिकाओं की रचना सूत्रों के ही आधार पर हुई है। सांख्य विषयक शायद ही कोई ग्रन्थ या ग्रन्थकार रहा हो जिसकी चर्चा इस ग्रन्थ में न आई हो। इस प्रकार इस ग्रन्थ को सांख्य दर्शन का विश्वकोश कहा जा सकता है।

सामवेद के व्याख्याकार पंडित चमूपति

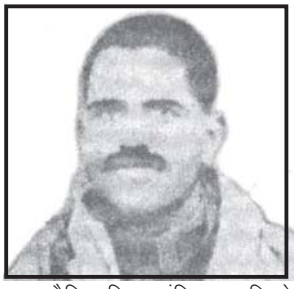

वैदिक विद्वान पंडित चमूपति के लेखन की विशेषता थी तीन भाषाओं में अधिकार पूर्वक कलम चलाना। हिंदी,उर्दू तथा अंग्रेजी के सफल लेखक होने के साथ–साथ वे रससिद्ध कवि थे और हिंदी तथा उर्दू में समान रूप से काव्य रचना करते थे। पंडित चमूपति का जन्म पंजाब की मुस्लिम रियासत बहावलपुर (अब पाकिस्तान में) में 15 फरवरी 1893 को महता वसन्दाराम के यहाँ हुआ। इनका बचपन का नाम चंपतराय था जो कालांतर में पंडित चमूपति हो गया। इनकी उच्च शिक्षा बहावलनगर के सादिक् इजर्टन कालेज में हुई जहाँ से आपने एम.ए. किया। महर्षि दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन ने उन्हें आर्य समाज की शिक्षाओं से परिचित कराया। अब वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से जुड़े और दयानन्द सेवा सदन से सम्बद्ध होकर सारा जीवन धर्म प्रचारार्थ अर्पित कर दिया। कालांतर में वे गुरुकुल कांगड़ी में आ गए और यहाँ मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों पर कार्य किया। 15 जून 1937 को उनका निधन हो गया। पंडित चमूपति ने पर्याप्त मात्रा में लेखन कार्य किया है। उनका वेद विषयक साहित्य निम्न है–

जीवन ज्योति– सामवेद के आग्नेय पर्व की भावपूर्ण व्याख्या। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित।

सोम सरोवर– सामवेद के पवमान पर्व की व्याख्या। उर्पयुक्त दोनों ग्रंथों के अध्ययन से सामवेद के मंत्रों में निहित भक्ति तत्त्व स्फुट होता है।

यास्क युग की वेदार्थ शैलियाँ– यास्क रचित निरुक्त यों तो वेदार्थ की कुंजी कहा जाता है, किंतु उसमें वेदों के अर्थ करने की अन्यान्य प्रणालियों की भी चर्चा है। लेखक ने इन सभी शैलियों की विवेचना की है तथा वेदार्थ में निरुक्त के महत्व को बताया है।

यजुर्वेद के प्रथम दस अध्यायों का अंग्रेजी अनुवाद– यह कांगड़ी की मुख पत्रिका 'वैदिक मैगज़ीन' में धारावाही छपा था। तदनंतर ग्रंथाकार भी छपा।

वेदार्थ कोष– स्वामी वेदानंद तीर्थ के सह संपादन में तैयार किया गया। यह संदर्भ ग्रंथ तीन खडों में (1934 से 1940 की बीच) छपा था। स्वामी दयानन्द कृत वेद भाष्य में आए किन–किन पदों के क्या–क्या अर्थ किए गए हैं, इसका निर्देश इस कोष में मिलता है। ऋषि दयानंद की शैली पर लिखने वाले परवर्ती वेद भाष्यकारों के लिए यह ग्रंथ प्रदीपवत् है।

1. ऋषेर्दयानंदस्य वेदभाष्येऽन्यग्रंथेषु चोपलभ्यमान वैदिक शब्दार्थानां संग्रह रूप:। तत्र निघण्टुनिरुक्त ब्राह्मणोपनिषदादर्थौद्धृमिश्चि संवलित:। कांगड़ी गुरुकुलाचार्यस्य पंडित चमूपतेर्निरीक्षणे संग्रहीत: सम्पादितश्च। श्रीमत्या पंचनद प्रांतीयाऽऽर्य प्रतिनिधि सभया प्रकाशित:।

महान गवेषक पंडित गंगाप्रसाद जज

विभिन्न मतों का तुलनात्मक अध्ययन कर वैदिक धर्म की सर्वाधिक प्राचीनता को स्थापित करने वाले पंडित गंगाप्रसाद जज अपने विख्यात ग्रंथ The Fountain head of Religion के कारण विशेष ख्याति उपार्जित कर सके। आपका जन्म 1871 में मेरठ के एक वैश्य परिवार में हुआ। आपने 1983 में एम.ए. किया और तत्कालीन संयुक्त प्रांत की प्रशासनिक सेवा में आ गए। 1922 से 1939 तक वे पहाड़ी राज्य टिहरी के मुख्य न्यायधीश पद पर रहे।

1941–1944 की अवधि में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। 13 जनवरी 1966 को उनका निधन हो गया। आपने कतिपय वेद मंत्रों का विस्तृत विवेचन लघु पुस्तिकाओं के रूप में किया है– मनुष्य समाज (ब्राह्मणोऽय मुखमासीद (यजुर्वेद 31/11 की व्याख्या 1897), आकृष्णान (रजसा) इस यजुर्वेद मन्त्र की व्याख्या 1897),**सूर्य सप्ताश्व** वर्णन (अथर्ववेद के 19/53 की व्याख्या)। आपके द्वारा ही मंत्र अंग्रेजी में निम्न पुस्तकों में व्याख्यात हुए – vedic text No.1, The Constitution of the human society, vedic text No. 2 Septenary Composition of Solar Light (1900) आके द्वारा लिखित Problems of Uniavers आपके दर्शन की गम्भीर विवेचना करते हैं। वैदिक विकासवाद की ग्रन्थ में डार्विन प्रवर्तित विकासवाद की समीक्षा लिखी गई है। Koshas and Lokas in the vedas. में पंच कोशों तथा सप्त लोकों की विवेचना की गई है।

साभार : आर्य समाज के द्विान लेखक और साहित्यसेवी

वेदविद् स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती

शताधिक ग्रंथों के लेखक तथा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास ग्रहण करने वाले पंडित जगदीश विद्यार्थी का जन्म 10 जनवरी 1931 को हुआ। 16 फरवरी 1975 को वसंत पंचमी के दिन आपने चतुर्थाश्रम की दीक्षा ली और देश–विदेश में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। आपके द्वारा लिखे गए वैदिक ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है– चारों वेदों के शतकों का संपादन। ऋग्वेद और यजुर्वेद के इन शतकों में ऋषि दयानन्द का भाष्य दिया गया है, जबकि सामवेद और अथर्ववेद शतकों के क्रमश: पंडित तुलसीराम स्वामी तथा पंडित क्षेमकरणदास त्रिवेदी का भाष्य दिया है।

चतुर्वेद सूक्ति संग्रह, प्रार्थना प्रकाश (1963), प्रार्थनालोक (1957), वेद सौरभ (1964), वैदिक उदात्त भावनाएँ (1963), स्वाध्याय के लिए उपयोगी मंत्रार्थ संग्रह हैं। **प्रभात वंदन** में प्रात:काल के समय उच्चारण किए जाने वाले मंत्रों (प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं (34–34–38) आदि की व्याख्या दी गई है जबकि **ऋग्वेद का अक्ष सूक्त ऋग्वेद के दशम मंडल के सूक्त** (10–34) की व्याख्या है। इस सूक्त में अक्ष क्रीड़ा को निंदनीय बताया है जबकि कृषि कर्म की प्रशंसा की गई है।

बढ़ती रेप की घटनाएँ और वैलेन्टाइन दिवस की संस्कृति

ईश नारंग

लगभग दो मास से सारा भारत दिल्ली के कुविख्यात रेप की घटना से चिंतित है। लगातार कितने दिन प्रदर्शन होते रहे। अब भारत सरकार ने एक अध्यादेश द्वारा इस प्रकार की घटनाओं के लिए अधिक कड़े दंड का प्रावधान कर दिया है। लोगों में विशेष कर महिला वर्ग में आक्रोश है। यह उचित भी है। जिस देश में नारी पूज्या थी,वन्दनीय थी, दुर्गा और लक्ष्मी का रूप थी, उस देश में बलात्कार। यह वास्तव में अत्यन्त दुखी करने वाली, मन को व्यथित कर देने वाली घटना थी।

किन्तु इन सब के पीछे कारण क्या है? नारी कैसे वन्दनीय से भोग की वस्तु बन गयी? यदि हम विचार करें तो कारण ढूँढना अधिक कठिन नहीं होगा। देश में विशेषकर महानगरों में पाशचात्य सभ्यता का अंधानुकरण एक फैशन बन गया है। यह अंधानुकरण चाहे पहनावे का हो, चाहे खान पान का हो या त्यौहार मनाने का, यह कथित सभ्य समाज का **स्टेट्स सिम्बल** बन गया है। जो जितना अधिक पश्चिमी सभ्यता का पुजारी है उतना अधिक सभ्य माना जाता है। **वैलन्टाइन डे** या **प्रेम दिवस** इसी प्रवृत्ति का एक नवीनतम उदाहरण है। इसी प्रवृत्ति ने बहिन और भगिनी को भोग्या बना दिया। स्नेह और वात्सल्य का स्थान यौन उत्पीड़न ने ले लिया। इस दिवस का आरम्भ कैसे हुआ, पश्चिम में कैसे, किस रूप में और क्यों मनाया जाता है, इसे जाने बिना हम, इसे मनाने में पश्चिम के देशों को भी मात देने लगे हैं।

इस दिवस का इतिहास '**सेंट वैलन्टाइन** नामक व्यक्ति से आरम्भ होता है। अपने प्यार को न पा सकने में पागल हुए इस व्यक्ति ने 14 फरवरी को जो उसकी प्रेमिका से बिछुडने का या ठुकराए जाने का दिन था, उसे पुनः प्रेम पत्र लिख कर अपने पागलपन का प्रदर्शन करता था। कालांतर में यह दिन बिछड़े हुए प्रेमी–प्रेमिकाओं का पुनर्मिलन दिवस बन गया। जो जोड़े मिल कर बिछुड़ गए या चाह कर भी न मिल सके वह इस दिन पुनः मिलने का प्रयास करते हैं। होना तो चाहिए था यह एक प्रायश्चित दिवस जब वह इस बात का विचार करते कि क्यों, किन भूलों के कारण वे एक दूसरे को खो बैठे? किन्तु आज यह अनैतिक और अवैध संबंधों का दिवस बन गया है।

15 फरवरी 2006 को टाइम्स ऑफ इंडिया में छपे एक समाचार के अनुसार इस दिवस से पहले और बाद में अमेरिका में प्राइवेट जासूसों की बहुत अच्छी कमाई होती है। विवाहित पति–पत्नी भी यह जानने के इच्छुक रहते हैं कि उनका जीवन साथी कहीं अपने पुराने प्रेमी से तो फिर मिलने नहीं गया? यदि किसी स्त्री या पुरुष ने कोई नयी पोशाक पहनी है तो उसके जीवन साथी को शक होने लगता है कि कहीं यह उसके पुराने प्रेमी ने तो नहीं दी है। इसी प्रकार पुराने प्रेमी से जबरन पुनः यौन सम्बन्ध बनाने की इच्छा भी रहती है।

किन्तु इस सब को बिना समझे हम भारतवासी इस प्रकार के उत्सवों का व परम्पराओं का अंधानुकरण करने लगते हैं। भारत में भी दीपावली के अतिरिक्त यदि किसी दिन गुलाब के फूलों की सब से अधिक **बिक्री होती है तो वह इसी दिन होती है। कहाँ पहुँच गए हैं हम लोग? पागलपन इतना बढ़ गया है कि इस दिन के इतिहास को भूल कर भाई, बहिन, माता, पुत्र और पिता, पुत्री भी एक दूसरे को वैलन्टाइन का उपहार देने लगते हैं। उपहार की वस्तुएँ बेचने वाले तो इस उन्माद का लाभ उठाते ही हैं। उपहार भी अधिकांश विदेशी होते हैं। जो कार्य लार्ड मैकाले नहीं कर पाया इस वैलेन्टाइन डे ने कर दिखाया है।**

नैतिक मूल्यों से रहित युवा, पूर्व से पश्चिम की ओर जाने की होड़ में भ्रमित युवा जब अपनी बढ़ी हुई काम वासनाओं की पूर्ति नहीं कर पाता तो आवेश में बलात्कार जैसी घटनाओं का कारण बनता है। केवल कानून बनाने से इस प्रकार की घटनाएँ रुकने वाली नहीं। कानून तो कड़े होने ही चाहिए किन्तु साथ ही हमारी अपनी सोच , अपने बच्चों की शिक्षा, उनको दिए गए संस्कार और उनका सही पालन–पोषण उनके साथ बिताया गया समय उनकी बातों को / मन के विचारों को समझने का प्रयास उन्हें सही दिशा देने का संकल्प इस प्रकार की घटनाओं को रोकने में सहायक हो सकती हैं, अन्यथा पश्चिम की आंधी–रूपी बिल्ली हमें खाने आ रही है और हम कानून की आड़ में कबूतर की तरह आँखे बंद कर के बैठे हैं। जब तक हमारी आँखें नहीं खुलेंगी घटना के बाद प्रदर्शन करना तो वही बात होगी **'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत'। – मंत्री, आर्यसमाज दयानंद विहार, दिल्ली**

आर्य वीरदल बिहार का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी से 3 मार्च 2013 तक

आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, दयानन्द जन कल्याण आश्रम, ग्राम व पत्रालय जरैल, वाया बेनीपट्टी, जनपद मधुबनी, बिहार में आर्य वीरदल बिहार प्रान्त का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी 2013 से 3 मार्च 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान स्वामी देवव्रत सरस्वती एवं प्रान्तीय दो दिवसीय आर्य सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधाना साध्वी उत्तमायतिजी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्यजी, आर्ष गुरुकुल कोलाघाट, बंगाल के आचार्य श्री ब्रह्मदत्तजी, दिल्ली सभा के प्रधान ब्र.राजसिंह आर्यजी, बिहार प्रान्त के आर्य वीरदल के प्रधान पं. व्यासनन्दन शास्त्रीजी, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगाप्रसादजी एवं मन्त्री श्री रमेन्द्र गुप्तजी, सार्व. आर्य वीरदल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक, श्री हरिसिंह आर्यजी , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्यजी, आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्यजी, आर्य वीरदल उ.प्र. के शिक्षक श्री राजेश आर्यजी, आर्य वीरदल के शिक्षक श्री कर्मवीरजी एवं आचार्य सुश्रुतजी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। शिविर में बिहार प्रान्त के सभी आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से अपील की गई है कि इस विशेष अवसर पर अपने समाज एवं संस्थाओं में कोई भी कार्यक्रम आयोजित न करें और समाज एवं आर्य संस्थाएँ 12 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के युवाओं को शिविर में भेजें। शिविर में भग लेने वाले सभी आर्य वीरों को खाकी हाफ पेन्ट, दो सेन्डो बनियान, सफेद मोजे, सफेद जूते, लंगोट, लाठी, कॉपी, पेन टार्च, भोजन पात्र, पहनने और बिछाने के वस्त्र, तोलिया, साबुन, तेल आदि आवश्यक वस्तुएँ साथ अवश्य लाएँ।

शिविर का पहुँच मार्ग–दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता एवं अन्य स्थानों से आने वाले महानुभाव दरभंगा/मधुबनी आएँ। पटना, दरभंगा, समस्तीपुर एवं मुजफ्फरपुर से बेनीपट्टी की बस में बैठकर हनुमान चौक उतरकर गुरुकुल आ जाएँ।

बिहार के इस पिछड़े क्षेत्र के इस गुरुकुल में आचार्य सुशील जी के संचालन में 24 बालक अध्ययनरत हैं। गुरुकुल में और अधिक बच्चे आकर आर्ष परम्परा के अनुसार विद्याध्ययन करें, इसके लिए आवश्यक है, इसके संसाधनों में वृद्धि हो। अनेक संघर्षों के उपरान्त भी गुरुकुल अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित है। गुरुकुल का उद्देश्य ही आर्य समाज, वेद एवं महर्षि दयानन्दजी के उदद्देश्यों को पूर्ण करने वाले बालक तैयार करना। आर्य महानुभावों का गुरुकुल के प्रति सहयोग आपेक्षित है। दानी आर्यजन अपना सहयोग गुरुकुल दयानन्द वाणी के नाम पंजाब नेशनल बैंक बेनीपट्टी शाखा के बचत खाता संख्या 0586002100002941 है। टूकर कोड 847024504 एवं आइ.एफ.एस. सी कोड पी.यू.एन.बी. 0058600 है। सहयोग राशि चैक/ड्राफ्ट से भी भेजा जा सकता है। आचार्य सुशील, संचालक, आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल, वायुदूत : 09199737901, 08809852187

विशेष –शिविर से पूर्व श्री सतेन्द्र आर्य जी द्वारा 1 फरवरी से 24 फरवरी2013 तक विभिन्न ग्रामों में जन–जागरण और वेद कथाओं के कार्यक्रम आयोजित है।

पृष्ठ एक का शेष

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार.....

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान और आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित दिल्ली विश्व पुस्तक मेला–2013 में वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार की दृष्टि से दिल्ली के प्रगति मैदान में हॉल संख्या एच–12, स्टाल संख्या–बी–309–310 में स्टाल लगाया गया है, जिसका उद्घाटन 4 फरवरी को प्रातः 11 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान बाबू गंगा प्रसादजी ने किया। इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में श्री प्रसादजी ने कहा, वेद मानव कल्याण के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। वेद ज्ञान से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश एक सम्पूर्ण ग्रन्थ है, जिनमें जीवन, समाज, संस्कृति, मत, सम्प्रदाय और राजनीति जैसे अनेक विषयों का वर्णन किया गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्ष साहित्य का प्रचार–प्रसार अधिकाधिक हो। दिल्ली सभा का कार्य इस मामले में स्तुत्य है। उन्होंने आगे कहा, धर्म, अध्यात्म, वैदिक संस्कृति–सभ्यता और सभी सत्य विद्याओं के ज्ञान के लिए वेद को विश्व मानवता को अपनाना ही होगा। इस अवसर पर सर्वश्री धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, सुखवीरसिंह के अतिरिक्त अनेक आर्य महानुभाव उपस्थित थे। गौरतलब है, दिल्ली सभा कई वर्षों से दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आर्ष साहित्य के प्रचार–प्रसार हेतु स्टाल लगाती रही है।

क्या गोशालाएँ आत्म–निर्भर नहीं बन सकती ? एक सामयिक और सर्वोपयोगी प्रश्न

प्रो.जयदेव आर्य

महर्षि दयानन्द ने गोहत्या प्रतिबन्ध के लिए राजनीतिक दलाल(पोलेटिकल एजेन्ट) कर्नल बुक्स से बातचीत 1866 में की थी। तब से ऋषि दयानन्द ने गोरक्षा को अपने मुख्य कार्य में सम्मिलित कर लिया था। उन्हें जहाँ भी अवसर मिलता था वे गोरक्षा का प्रश्न उठाते थे। कालान्तर में उन्होंने लगभग 3 करोड़ हस्ताक्षरों से युक्त एक प्रतिवेदन गोहत्या बन्दी के लिए महारानी विक्टोरिया को भेजने के लिए एक आन्दोलन का प्रवर्तन किया, जो उनकी मृत्यु पर्यन्त जारी रहा, पर पूर्ण नहीं हो पाया था। उन्होंने किसी को लिखा था कि गोरक्षा और देश में हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा बनवाने का कार्य यदि पूरा हो गया, तो देश सुधार की मुख्य नींव पड़ जाएगी। दुर्भाग्य से आज लगभग 150 वर्ष बीत जाने पर भी ये दोनों कार्य अधूरे पड़े हैं। आज देश में नये–नये बूचड़खानें खुलते जा रहे हैं और देश में अग्रेंजी के प्रचलन ने शासन तन्त्र से प्रायः हिन्दी को निष्कासित कर दिया है, पर हम सो रहे हैं या असहाय दशा में पड़े मूक दर्शक होकर देख रहे हैं। यह बड़े खेद की बात है। रेवाड़ी में गोरक्षा और कृषि की उन्नति के लिए ऋषि ने राव युधिष्ठिर सिंह के सहयोग से देश की प्रथम गोशाला स्थापित की तथा 'गो–कृषिदि रक्षिणी सभा' भी बनाई। इस गोशाला आन्दोलन ने उत्तर भारत में ऐसा जोर पकड़ा कि प्रायः सभी राज्यों में हजारों गोशालाएँ स्थापित हुईं, परन्तु 'सब दिन रहत न एक समाना' की लोकोक्ति के अनुसार आज ये गोशालाएँ गोवंश की उन्नति और रक्षा करने का साधन न बन कर प्रायः केवल चन्दे और सरकारी अनुदान पर चलने वाली लुंज–पुंज संस्थाएँ बनी हुई हैं। हरियाणा सरकार आज गोशालाओं को प्रति गाय के हिसाब से 15रुपये का अनुदान देने में आनाकानी कर रही है, और स्वयं को यह व्यय उठाने में असमर्थ बता रही है। अनेक स्थानों पर गोशालाओं के धन में भ्रष्टाचार के अनेक झूठे–सच्चे आरोप भी लग रहे हैं और व्यवस्था में दोष भी है।

जब ये गोशालाएँ चलीं तब प्रायः इसे धार्मिक और पुण्य का कार्य मानकर लोग बड़ी मात्रा में दान देते थे और प्रायः अशक्त तथा अनाथ गौएं यहाँ रखी जाती थीं। इससे उन गौओं का पालन तो हुआ, पर गोवंश की उन्नति नहीं हुई। अनेक समृद्ध गोशालाओं की प्रबन्धक समितियों में भ्रष्ट लोगों ने प्रभुत्व प्राप्त कर उन्हें दिवालिया तथा अपनी आजीविका के लिए भ्रष्ट साधन भी बना लिया। अब आज जब सारी दुनियाँ और हमारे देश में भी वैज्ञानिक युग का प्रवर्तन हो चुका है, प्रत्येक क्षेत्र में नये–नये प्रयोग हो रहे हैं और दान से चलने वाली संस्थाओं पर आर्थिक संकट के बादल मंडरा रहे हैं तब प्रश्न होता है कि क्या इन गोशालाओं को आत्म–निर्भर बनाने और गोवंश को बूचड़खानों में जाने, गली–गली में भूख से मरने से बचाने के लिए गोपालन को कोई भी गोपालक व्यक्ति न तो अपनी अच्छी और बूढ़ी गौओं को बेचने को विवश हो और न ही बछड़े–बछड़ियों और व्यवसायों की भाँति एक बहुत ज्ञानदायक व्यवसाय बन जाए और देश में गोदुग्ध पुष्कल मात्रा में और सस्ता मिले। गोशालाओं में भी उत्तम नस्ल की गौएँ और सांड रखकर गोवंश की उन्नति की जाए ओर अनुत्पादक गौओं के मूत्र–गोबर का उपयोग औषधि, खाद आदि बनाने में करके उन्हें भी लाभदायक बनाया जाए। गोशालाओं में जो भ्रष्ट, आलसी और अयोग्य पदाधिकारी और कर्मचारी हों, उन्हें हटाकर यदि योग्य, नई तकनीक के जानकार गो–कृषि विशेषज्ञों को नियुक्त किया जाए, तो मुझे लगता है कि गोशालाओं और गोपालकों की आर्थिक स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ सकता है। आज अनेक लोगों ने गोपालन और कृषि क्षेत्र में अपने नये–नये प्रयोगों से अनेक चामत्कारिक परिवर्तन किये हैं। देश में अनेक गोपालकों द्वारा किए गए प्रयोग इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। हमें ऐसी सारी जानकारी इकट्ठी करके कृषकों, डेयरी मालिकों, गोपालकों तक पहुँचानी चाहिए और गव्य पदार्थों के वितरण केन्द्र बनाने चाहिए। उनके अनुसन्धान और मानकीकरण पर भी ध्यान देना चाहिए। कैसे–कैसे अद्भुत प्रयोग लोगों ने किये हैं, उनकी एक झलक नीचे के एक समाचार से मिल सकती है। यह समाचार एक पत्रिका से हमने लेकर कर्मयोगी पत्रिका में छापा था। मुझे बताया गया है कि इस फार्म के स्वामी डागर जी स्वयं आर्यसमाजी हैं। इनसे अधिकाधिक कृषक और गोपालक लाभ उठाएँ। **देश में ऐसे गौ शालाएँ हैं जो प्रति माह एक लाख या इससे अधिक का शुद्ध आय करती हैं। ऐसे गोशालाओं के प्रबन्धकों से सम्पर्क किया जा सकता है और गो शाला खोलकर बेरोजगारी कम की जा सकती हे और गायों को बूचड़खानों या कसाइयों के हाथ में जाने से बचाकर पुण्य भी अर्जित कर सकते हैं। लेखक सम्पर्क : 273,सै.–56, गुड़गांव**

श्री दीनदयाल गुप्त एवं श्री शिवकुमार चौधरी प्रदत्त सहयोग राशि से छात्रावास बोकाजान असम का निर्माण आरम्भ

छात्रावास का शिलान्यास करते इंजि.नरेन्द्र नांरग जी व साथ में सर्वश्री लीला बोरा जी,संतोष शास्त्रीजी, जोगेन्दर खट्टर जी, विनय आर्य जी

कार्बी आग्लांग (असम) के लोक सभा सांसद श्री विरेन्द्र इंगति जी के साथ क्षेत्र मे आर्यसमाज के बन रहे विद्यालय एवं छात्रावास के सम्बन्ध में चर्चा करते श्री विनय आर्य जी एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर जी

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

प्रान्तीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर
तिथि: शुक्रवार, 15 फरवरी से 21 फरवरी 2013 तक
मुख्य प्रशिक्षक : वैद्य विज्ञानमुनि जी, डॉ.ब्रह्ममुनि जी

वानप्रस्थी चिन्तन शिविर
तिथि: मंगलवार, 19 फरवरी से 21 फरवरी 2013 तक
मार्गदर्शक : पं.वेदमुनि जी वेदालंकार, डॉ.ब्रह्ममुनि जी

अन्तर्जातीय विवाह परिवार एवं युवक–युवती परिचय सम्मेलन
तिथि: गुरुवार, 21 फरवरी 2013 तक
समय: प्रात:10 से सायं 5 बजे तक

प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन
तिथि: शुक्रवार, 22 फरवरी 2013 प्रात: 10 से दोप.1 बजे तक
मार्गदर्शक : आचार्य बलदेव जी (प्रधान सार्वदेशिक सभा)

–: निवेदक :–

स्वामी श्रद्धानन्द	बलीराम पाटील	राजेन्द्र दिवे	रामपाल लोहिया	उग्रसेन राठौर	प्रभुलाल गोहिल
(प्रधान)	(का.प्रधान)	(मन्त्री)	(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा परली वैजनाथ — आर्य समाज परली वैजनाथ जिला– बीड (महाराष्ट्र)

इतिहास पुरुषों के अध्याय से

लाला लाजपतराय का बहुआयामी व्यक्तित्व

गतांक से आगे

लाला लाजपतराय : लेखक और साहित्यकार के रूप में

लाला जी का अध्ययन विशाल था। धार्मिक, सामाजिक,राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रश्नों पर उनका स्पष्ट चिन्तन था। उनका लेखन विशद, विविध विषयों से सम्पृक्त था बहुआयामी था, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

जीवनी–लेखन : स्वदेशी और अन्य देशीय महापुरुषों के जीवन–चरित्र–लेखन का उनका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इटली के विख्यात देशभक्त मैजिनी और गैरीबाल्डी का जीवनी–लेखन तो विदेशी शासकों की दृष्टि में इतना आपत्तिजनक समझा गया कि इन दोनों पुस्तकों की जब्ती के आदेश प्रसारित किए गए। उनके द्वारा निम्न जीवन– चरित्र लिखे गए–

1. लाइफ एण्ड वर्क ऑफ पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. – इस ग्रन्थ का प्रकाशन 1891 में पं. गुरुदत्त के निधन के एक वर्ष पश्चात हुआ। यह लालाजी की प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने मित्र तथा सहपाठी पं. गुरुदत्त के संस्मरणों के आधार पर लिखा था। विरजानन्द प्रेस, लाहौर से प्रकाशित यह ग्रन्थ प्रायः दुर्लभ हो चुका है। इसका उर्दू संस्करण 1992 में छपा था।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम – स्वामी दयानन्द का यह उर्दू जीवन–चरित्र लालाजी ने 1898 में लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद गोपादास देवगण शर्मा ने किया जो 1898 में ही दुनिया के महापुरुषों की जीवन–ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत छपा। 2024 वि. में सार्वदेशिक पत्र ने इसे अपने विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया।

3. **योगिराज महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन–चरित्र** – उर्दू में इसका प्रकाशन 1900 में लाहौर से हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद मास्टर हरिद्वारीसिंह बेदिल (गुरुकुल महाविद्यालय,ज्वालापुर में अध्यापक) ने किया, जिसे पं. शंकरदत्त शर्मा ने वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद से प्रकाशित किया।

4. **शिवाजी महाजन का जीवन–चरित** – 1896 में उर्दू में प्रकाशित।

5. **महात्मा ग्वीसेप मैजिनी का जीवन–चरित्र** – यह भी मूलतः उर्दू में लिखा गया और 1896 में प्रकाशित हुआ। ब्रिटिश शासन ने इसे जब्त कर लिया। इसका हिन्दी अनुवाद श्री केशवप्रसाद सिंह ने किया जिसके कई संस्करण छपे। नेशनल बुक ट्रस्ट ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

6. **गैरीबाल्डी** – उर्दू में यह जीवन–चरित्र लिखा गया था। इसे भी अंग्रेजों ने प्रतिबन्धित कर दिया था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् नेशनल बुक ट्रस्ट ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

7. सम्राट् अशोक – मूल ग्रन्थ उर्दू में था। इसका हिन्दी अनुवाद चौधरी एण्ड संस, बनारस ने 1933 में प्रकाशित किया।

अन्य ग्रन्थ

1. दि आर्य समाज – आर्य समाज के सिद्धान्तों, कार्यों तथा उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द के जीवन एवं कृतित्व का विश्लेषण करने वाला यह अंग्रेजी ग्रन्थ 1914 में लिखा गया था। उस समय लालाजी लंदन में थे। सुप्रसिद्ध लांगमैंस ग्रीन एण्ड कम्पनी ने इसे 1915 में प्रथम बार लंदन से ही प्रकाशित किया। इसका एक भारतीय संस्करण प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा ने सम्पादित किया, जिसमें उपयुक्त परिवर्धन भी किया गया था। ओरियेण्ट लांगमैंस,नई दिल्ली ने इसे 1967 में प्रकाशित किया। इन पंक्तियों के लेखक ने इसका हिन्दी अनुवाद किया जिसके दो संस्करण क्रमशः 1982 तथा 1994 में अजमेर तथा दिल्ली से प्रकाशित हुए।

2. **दि मैसेज ऑफ भगवद्गीता – इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद से 1908 में प्रकाशित।**

3. **अनहैप्पी इण्डिया** – मिस कैथराइन मेंयो नामक चालाक अमरीकी महिला पत्रकार ने भारत को बदनाम करने तथा उसे स्वराज्य के लिए अयोग्य सिद्ध करने की दृष्टि से ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की प्रेरणा पाकर 'मदर इण्डिया' नामक एक पुस्तक लिखी जो भारतीय चरित्र को अत्यन्त विकृत, दूषित तथा घृणोत्पादक शैली में प्रस्तुत करती थी। महात्मा गाँधी ने पढ़कर इसे गंदी नाली के निरीक्षक की रिपोर्ट' कहा था। लाला जी ने इस पूर्वाग्रहयुक्त पुस्तक का सटीक और मुँह तोड़ उत्तर 1928 में अनहैप्पी लिखकर दिया। दुखी भारत शीर्षक से इसका हिन्दी अनुवाद इण्डियन प्रेस,इलाहाबाद ने ही प्रकाशित किया था।

लाला जी ने आर्थिक,राजनैतिक तथा शिक्षा आदि विषयों पर अनेक उच्च कोटि के ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखी थे। इनका यथोपलब्ध विवरण इस प्रकार है –

1.England's Debt to india : B.W. Huebsch,New york से 1917 में प्रकाशित।

2.The Evolution of Japan : आर.चटर्जी,कार्नवालिस स्ट्रीट,कलकत्ता से 1919 में प्रकाशित।

3.Ideals of Non-cooperations and other Essays : जी.ए. नटेसन, मद्रास से 1924 में प्रकाशित।

4.India's will to Freedom : Writings and speeches on the present situation: गणेशन एण्ड कम्पनी, मद्रास से 1920 में प्रकाशित।

5. The Problems of National Education in india : 1920 में प्रकाशित। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा 1966 में पुनः प्रकाशित।

6. The Political Future of india : B.W.Huebsch, New york से 1919 में प्रकाशित।

7. Story of My Deporation : पंजाबी प्रेस, लाहौर से 1908 में प्रकाशित।

8. Young india-An Interpretation and history of the National Movement : B.W.Huebsch, New York से 1916 में प्रकाशित। भारत लोक–सेवक मण्डल (Servants of the people's Society) लाहौर द्वारा 1927 में लाहौर से प्रकाशित भारतीय संस्करण।

9.Report of people's Famine Relief Movement 1908 : लाहौर से 1909 में प्रकाशित।

10. The Story of My life : The people, लाहौर का लाजपतराय विशेषांक (अप्रैल 13,18 सन् 1929)

यह लाला जी आत्मकथा है जिसका हिन्दी अनुवाद पं. भीमसेन विद्यालंकार ने किया, जो 1932 में नवयुग ग्रन्थमाला, लाहौर से प्रकाशित हुआ।

लालाजी की जन्म–शताब्दी (1965) के अवसर पर विजयचन्द्र जोशी ने लाला लाजपतराय–आटोबायोग्राफिक्ल राइटिंग्स शीर्षक से उनकी आत्मकथा का सम्पादन किया तथा दो खण्डों में लाला जी के लेखों तथा भाषणों का संग्रह भी प्रकाशित किया।

लाला जी सफल पत्रकार भी थे। उन्होंने उर्दू में पंजाबी तथा वन्देमातरम् नामक पत्र निकाले। 1918–20 में उन्होंने न्यूयार्क से यंग इण्डिया नामक एक अंग्रेजी मासिक भी प्रकाशित किया था।

देश की आर्थिक और वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना 1894 में की। बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन इसके मुख्य सचिव रहे थे। लालाजी द्वारा स्थापित भारत लोक–सेवक मण्डल (Servants of the people's Society) ने देश के नवजागरण तथा सेवा का अभूतपूर्व कार्य किया है। प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन,भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुन शास्त्री तथा पं. अलगूराय शास्त्री जैसे देशभक्तों ने लालाजी से प्रेरणा लेकर ही राष्ट्र–सेवा का पाठ पढ़ा था। **समाप्त**

विशेष सूचना

आगामी आयोजित कार्यक्रम

सभी आयोजनों में अधिकाधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाएँ

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (ऋषि पर्व)
तिथि : गुरुवार, 7 मार्च 2013
आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

होली के पावन अवसर पर
होली मिलन मंगल समारोह का भव्य आयोजन
तिथि : रविवार, 24 मार्च 2013
आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ज्योति–पर्व (ऋषि बोधोत्सव)
तिथि : रविवार, 10 मार्च 2013
आयोजक : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली प्रदेश

महाशय धर्मपाल जी के 90 वें जन्मदिवस के अवसर पर
अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन
तिथि : मंगलवार, 26 मार्च 2013
आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम सम्पन्न — पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी का जन्मदिवस

ज्ञानपुर। आर्य जगत् एवं संस्कृत जगत् के अन्तरराष्ट्रीय विद्वान स्व. पदम्श्री डॉ.कपिलदेव द्विवेदी के जन्मदिवस पर 4 संस्कृत विद्वानों को 'विश्वभारती सम्मान' प्रदान किया गया। जिसमें 'स्व.डॉ.कपिलदेव द्विवेदी स्मृति सम्मान'–प्रो.प्रभुनाथ द्विवेदी (वाराणसी),डॉ.श्रीकृष्ण सेमवाल (नई दिल्ली) तथा डॉ.राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय को प्रदान किया गया। स्व.'श्रीमती ओम् शान्ति स्मृति विश्वभारती सम्मान' डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा (राज.) को प्रदान किया गया। विद्वानों का परिचय डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी परिषद के अध्यक्ष ने प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन देते हुए प्रो.प्रभुनाथ द्विवेदी ने कहा, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. कपिलदेव द्विवेदी वेद,वेदान्त,व्याकरण ,भाषाविज्ञान तथा साहित्य के अप्रतिम विद्वान् थे। संस्कृत भाषा को पढ़ने , सीखने तथा जानने वाला प्रत्येक विद्यार्थी के लिए वे पूज्य हैं। संस्कृत जगत् में जितना काम पद्मश्री डॉ. द्विवेदी ने किया वह उनके अमिट व्यक्तित्व की छाप जनमानस में अंकित करता है। उन्होंने वेदों को जन–जन तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य करके मानवता की बहुमूल्य सेवा की है।

सम्मानित विदुषी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने कहा कि डॉ. कपिलदेव द्विवेदी संस्कृत व्याकरण के सूर्य थे, संस्कृत साहित्य के लौहपुरुष थे, वेद के मर्मज्ञ थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने कहा – डॉ. द्विवेदी के व्यक्तित्व में गजब का आकर्षण है। इस जनपद में अपर जिलाधिकारी रहते हुए उनसे मिलकर मुझे जो सन्तोष एवं प्रसन्नता हुई वह ऋषिकल्प व्यक्तित्व से साक्षात्कार के तुल्य था। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ.अशोक कुमार मिश्र ने कहा गुरुदेव डॉ. द्विवेदी ज्ञानपुर नगर की विभूति थे। उनसे भारत और संस्कृत की महिमा बढ़ी।

इस अवसर पर डॉ. रामशिरोमणि होरिल, डॉ. विजयकान्त दूबे, डॉ.विष्णु मोहन सहाय, डॉ. महेन्द्र राम, डॉ. दिनेश यादव, श्री अब्दुल हादी, श्री शिवसागर तिवारी, विद्यापति कोकिल, श्री मजहर शकील,रमाशंकर शुक्ल,पारसनाथ मिश्र, डॉ.राजकुमार पाठक, श्री जायसवाल, डॉ. धर्मेन्दु द्विवेदी, डा. आर्येन्दु, डा.जयश्री विन्ध्यवासिनी त्रिपाठी,सुरेश चन्द्र पाठक आदि ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए डॉ. द्विवेदी के गुणों को स्मरण किया तथा उनकी रचनाओं से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

कार्यक्रम का आरम्भ वृजेश आर्य के वैदिक मंगलाचरण से हुआ। श्री प्रणवदेव और श्री हरिओम ने कपिलाष्टक प्रस्तुत किया। कार्यक्रम संचालन प्रो. विद्याशंकर त्रिपाठी ने किया तथा आभार डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी ने व्यक्त किया।

–डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

आर्य समाज को नेताओं की नहीं सेवाभावी लोगों की आवश्यकता है। ये शब्द थे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के। इन शब्दों को साकार रूप देने के लिए सेवा भावना को प्रमुख रखते हुए आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव एवं आर्य समाज नई कालोनी गुड़गाँव के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द के 86 वें बलिदान समारोह का आयोजन किया गया।इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई तथा श्रद्धाजंलि समारोह के अतिरिक्त सेवा दिवस के रूप में समाज के पीड़ित लोगों के सहायतार्थ एक विशेष कार्यक्रम 22 दिसम्बर 12 को दशहरा गाऊण्ड नई कालोनी गुड़गाँव में सम्पन्न किया गया।

गुड़गाँव के कुछ दानवीर एवं दवाई उद्योग से जुड कुछ निष्ठावान एवं समर्पित व्यक्तियों ने इस समारोह को 'सेवा दिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया। इसके तहत विकलांगों को 10 ट्राई साईकिल, बहगियाँ, व्हील चेयर, नेत्रहीनों को गणित सीखने की लोहे की कीलियाँ, अन्ध विद्यालय बहरामपुर को बिजली एवं रुपये का सामान एवं ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश आदि लगभग 53000/– रुपये का सामान एवं अति निर्धन लोगों को उत्तम कोटि की 100 रजाइयाँ प्रदान की गई। इस अवसर पर सार्व. सभा दिल्ली के प्रधान श्री आचार्य बलदेव जी, स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धहारी सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

नि:शुल्क शल्य चिकित्सा शिविर

रामदुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ अस्पताल गुरुकुल आश्रम आमेसना के तत्वावधान में स्वामी धर्मानन्द के संचालन के 11 से 15 जनवरी 2013 तक परममित्र मानव निर्माण संस्थान के अध्यक्ष कै. रुद्रसेन के आर्थिक सहयोग से अहमदाबाद के सर्जरी क्षेत्र में नि:शुल्क आपरेशन कर्ता डॉ. संजय सा तथा उनके सहयोगी डॉ. यू.सी. महाराणा, डॉ. भुवनलाल नायक, डॉ. सी.के. देवांगन, डॉ. संगीता विशि, सुश्री आरती आर्याश्री, निलिमा, सुकान्ती मंजु बालक आदि के रात–दिन नि:स्वार्थ परिश्रम से 70 रोगियों के अनेक कष्टप्रद रोगों की सफल शल्य चिकित्सा हुई।

आर्य समाज बारां का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बांरा, राजस्थान का वार्षिकोत्सव 14 से 16 दिसम्बर2012 तक किया गया। श्रीमती सुदेश संगीताचार्य के भजन एवं पं. अग्निमित्र शास्त्री के उपदेश हुए।

उत्सव में कोटा आर्य समाजों के पदाधिकारी, सदस्य और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। –

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर, कोटा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तलवडी का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 22 से 24 दिसम्बर तक मनाया गया। पं. क्षेत्रपाल आर्य ने ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो.रामनारायण शास्त्री, पं.मदनमोहन आर्य, अग्निमित्र शास्त्री तथा पं. वृद्धिचन्द शास्त्री के प्रवचन एवं श्री सतीश सुमन के भजनोपदेश हुए।

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अर्जुन देव चडढ़ा ने इस अवसर पर कहा, जैसे स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य समाज का कार्य लोगों के बीच जाकर किये वैसे ही हमें भी समाज के कार्य को आर्य समाज मंदिरों से बाहर ले जाकर लोगों के बीच में करने चाहिए।

शोक समाचार — श्री नोहरचन्द्र अग्रवाल नहीं रहे

आर्य समाज और अन्य अनेक संस्थाओं से जुड़े समाजसेवी श्री नोहरचन्द्र अग्रवाल का 24 जनवरी2013 को 92 वर्ष की अवस्था में उनके आवास मुलताननगर, दिल्ली में निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार 25 जनवरी को निगमबोध घाट पर किया गया। वे अपने पीछे चार पुत्र सर्वश्री बलवन्त राय, कश्मीरीलाल, ऋषि राय व राजकुमार तथा पुत्रियाँ श्रीमती अमृति देवी, ओमपति व सावित्री सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्री अग्रवाल आर्य समाज और योगाधारित व शिक्षा पर आधारित अनेक संस्थाओं से जुडें हुए थे।

श्रद्धांजलि सभा –श्री स्व. नाहरलाल अग्रवाल की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 10 फरवरी को मुलताननगर सामुदायिक भवन, दिल्ली में किया गया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

प्रो. महावीर, उत्तराखण्ड वि.वि. के कुलपति नियुक्त

वैदिक विद्वान प्रो. महवीरजी को उत्तराखण्ड प्रान्त के राज्यपाल डॉ. अजीत कुरैशी ने उत्तराखण्ड संस्कृत वि.वि. का कुलपति नियुक्त किया है। अनेक उपाधियों से विभूषित डॉ. महावीरजी 40 वर्षो से अधिक समय से उच्च शिक्षा से जुड़े हुए हैं। आप के निर्देशन में 60 से अधिक शोधार्थी पी.एच.डी शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आप विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, कुलसचिव एवं उपकुलपति जैसे अनेक गरिमामय पदों को सुशोभित कर चुके हैं। आप की उत्कट संस्कृत सेवा को दखते हुए उत्तराखण्ड के मुख्यमन्त्रियों ने उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी का सदस्य और उपाध्यक्ष मनोनीत किया था।

डॉ. महावीर जी के आदर्श महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और देश के अमर बलिदानी रहे हैं। आप को वेद–वेदांग, आर्य विभूषण, इलाहाबाद का पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार, भारत माता मन्दिर, हरिद्वार जैसे अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। **डॉ. महावीर को संस्कृत विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त होने पर दिल्ली सभा और आर्य सन्देश परिवार उन्हें बधाई देते हुए हार्दिक अभिनन्दन करते हैं–सम्पादक**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

निर्वाचन

आर्य समाज, पुष्पांजलि इन्क्लेव,दिल्ली
प्रधान : श्री वेद व्रत कश्यप
मन्त्री : श्री विजय भण्डारी
कोषाध्यक्ष : श्री ज्ञानेन्द्र शर्मा

आर्य समाज ढाका, पूर्वी चम्पारन (बिहार)
प्रधान : श्री चन्द्रदेव प्रसाद आर्य
मन्त्री : श्री चन्द्रिका प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री देवदत्त आर्य

आर्य समाज बीकानेर गंगायचा अहीर,रेवाड़ी
प्रधान : श्री अशोक आर्य
मन्त्री : श्री धर्मवीर नम्बरदार
कोषाध्यक्ष : श्री दलवीरसिंह आर्य

आर्यसमाज भटौली दावांगण बदायूँ (उ.प्र.)
प्रधान – श्री जानकीप्रसाद आर्य
मन्त्री – श्री नौवत राम आर्य (पूर्व अध्यापक)
कोषाध्यक्ष – वेदप्रकाश गुप्ता आर्य (पोस्ट मास्टर)

साप्ताहिक आर्य सन्देश

04 फरवरी, 2013 से 10 फरवरी, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 07 जनवरी / 08 फरवरी –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 06 फरवरी, 2013

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (7 मार्च) पर शुभकामना विज्ञापन

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर इस वर्ष 10 से अधिक अखबारों में विज्ञापन दिए जाएंगे। ज्ञातव्य है, गत वर्ष भी इसी प्रकार से विज्ञापन दिए गए थे, जिससे करोड़ों लोगों के पास महर्षि के अवदान और जीवन दर्शन की प्रेरणा पहुँची। इन विज्ञापनों से जन मानस में महर्षि, आर्य समाज और वेद के प्रति जहाँ जिज्ञासा उत्पन्न होती है वहीं पर श्रद्धा भी पैदा होती है। आर्य महानुभाव, आर्यसमाजें, आर्य शिक्षण संस्थाएँ और अन्य आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाएँ इसमें भाग लेकर अपनी पुण्य आहुति सकते हैं। विज्ञापन की दर 1500/– रु0 एवं फोटो सहित 3000/– रु0 प्रति व्यक्ति/संस्था है। इसके लिए चेक **'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** को भेजा जाना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए उपमन्त्री **श्री सतीश चड्ढा जी** (09540041414) से सम्पर्क करें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री

प्रतिष्ठा में,
श्री.....

आर्य सन्देश को निम्न वेबसाईट पर प्राप्त करें

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज की अन्य पत्र–पत्रिकाओं को इस वेबसाईट पर देखा जा सकता – *सम्पादक*

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में

कुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

साहित्य, धर्म व संस्कृति की त्रिवेणी कहे जाने वाले तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुम्भ 2013 के शुभ अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु शिविर का आयोजन किया गया है। जो आर्यजन कुम्भ मेले में भ्रमणार्थ जाना चाहते हैं वे प्रचार शिविर के स्थान कुम्भ मेले के सेक्टर संख्या.9, प्लाट संख्या 66, पश्चिम पटरी, मुक्तिमार्ग एवं सै. 14, अरैल क्षेत्र, संकट मोचन, वल्लभाचार्य मार्ग, मोबाईल टावर के पीछे पहुँचकर लाभ अर्जित कर सकते हैं। पहुँचने के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। मेले की तिथि 13 जनवरी से 25 फरवरी 2013 है। **प्रचार-प्रसार के लिये कार्यकर्ता अपना अधिकाधिक समय दें, जिससे प्रचार का लक्ष्य पूरा हो सके** *सम्पर्क करें – सन्तोष कुमार शास्त्री, 9919020017, आर्यसमाज कृष्णनगर, कीडगंज, जिला – इलाहाबाद (उ.प्र.)* ***E-mail : rajok51@rediffmail.com website : .www.vedic-concepts.com***

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर